

## खर्ची पूजा

### स्रोत: पीआईबी

- हाल ही में **आषाढ** माह की **शुक्ल अष्टमी** के दिन प्रतविर्ष मनाई जाने वाली खर्ची पूजा (Kharchi Puja) का आयोजन किया गया।
  - पूजा के दिन 14 देवताओं को "**चंताई**" (**शाही पुजारी**) के सदस्यों द्वारा "**सैदरा**" नदी पर ले जाया जाता है। देवताओं को पवित्र जल से स्नान कराया जाता है और वापस मंदिर में लाया जाता है।
  - त्योहार के दौरान त्रपुरा के लोग **अपने 14 देवताओं** के साथ-साथ पृथ्वी की भी पूजा करते हैं।
  - इस त्योहार में एक महत्त्वपूर्ण अनुष्ठान में **चतुरदश मंडप** का निर्माण शामिल है, यह एक संरचना है जो त्रपुरी राजाओं के शाही महल का प्रतीक है।
  - खर्ची पूजा को '**14 देवताओं के त्योहार**' के रूप में भी जाना जाता है, इस पारंपरिक कार्यक्रम में त्रपुरा के लोगों के पैतृक देवता, **चतुरदश देवता (प्राचीन उज्जयंत महल में स्थिति)** की पूजा शामिल है।
- **इतिहास:**
  - हालाँकि यह आदवासी मूल का त्योहार है, यह त्रपुरा के आदवासी और **गैर-आदवासी** दोनों लोगों द्वारा मनाया जाता है।
  - ऐसा माना जाता है कि देवी **माँ या त्रपुरा सुंदरी**, भूर्मा की अधिष्ठात्री देवी है, जो **त्रपुरा के लोगों की रक्षा** करती है, जून माह में **अंबुबाची** के समय मासिक धर्म से गुजरती है। लोक मान्यता है कि देवी के मासिक धर्म के दौरान पृथ्वी अशुद्ध हो जाती है।
  - इसलिये मासिक धर्म समाप्त होने के बाद पृथ्वी को स्वच्छ करने के लिये अनुष्ठान द्वारा लोगों के पापों को धोने के लिये **खर्ची पूजा** की जाती है।



और पढ़ें: [अंबुबाची मेला](#)

